ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

भारत के संदर्भ में पर्यटकों के राज्यवार आनुपातिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन

Analytical Study of State-Wise Proportional Representation of Tourists In The Context of India

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

भुनेश्वर टेंभरे
प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
रानी दुर्गावती शासकीय
स्नातकोत्तर महाविघालय,
मण्डला, म.प्र., भारत

सारांश

वर्तमान समय में पर्यटन केन्द्रों को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि पर्यटकों को न केवल संपूर्ण आनंद प्राप्त हो सके, अपितु पर्यटक अपने आपको शारीरिक रूप से स्फूर्त, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एवं अंतरमन से पर्यटन केन्द्रों को देखने के साथ–साथ महसूस भी कर सकें। परिणामतः वर्तमान समय में पर्यटन मात्र मौज मस्ती का नाम नहीं रह गया है अपितु संस्कृति के आदान–प्रदान के साथ–साथ विदेशी मुद्रा अर्जन का भी सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है। भारत अपनी विविधतापूर्ण समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत, असीम नैसर्गिक एवं श्वासरोधक सौंदर्य, जैवविविधता, धार्मिक एवं पवित्र स्थानों से ओत–प्रोत भू–दृश्य हैं। इसी विविधता के कारण भारत के अलग अलग राज्यों में पर्यटकों का आनुपतिक प्रतिनिधित्व में भी असमानता लिए हुए है। प्रस्तुत शोध पत्र इन्ही तथ्यों को विश्लेषित करने का प्रयास है।

At the present time, tourist centers are being developed in such a way that tourists can not only get full enjoyment, but the tourists find themselves physically thriving, mentally young, culturally rich and inwardly looking at the tourist centers. Can feel it as well. As a result, in the present time, tourism is not just a name for fun, but is also emerging as a powerful medium for exchange of culture as well as earning foreign exchange. India is rich in landscape with its rich historical and cultural heritage, immense natural and breath-taking beauty, biodiversity, religious and holy places. Due to this diversity, there are disparities in the proportional representation of tourists in different states of India. The research paper presented is an attempt to analyze these facts.

मुख्य शब्द : नैसर्गिक एवं श्वासरोधक सौंदर्य, समृद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत।

Natural and Breath-Taking Beauty, Rich Historical and Cultural Heritage.

प्रस्तावना

पर्यटन तीव्र गति से बढता हुआ उद्योग है। वर्तमान समय में पर्यटन उद्योग न केवल भारत अपितु संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था का आधार स्तंभ बनता जा रहा है। वर्तमान समय में पर्यटन केन्द्रों को इस तरह से विकसित किया जा रहा है कि पर्यटकों को न केवल संपूर्ण आनंद प्राप्त हो सके, अपितु पर्यटक अपने आपको शारीरिक रूप से स्फूर्त, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध एवं अंतरमन से पर्यटन केन्द्रों को देखने के साथ–साथ महसूस भी कर सकें। यही कारण है कि भारत के विविधता से परिपूर्ण पर्यटन परिदृश्य के कारण भारत के अलग अलग राज्यों में पर्यटकों का आनुपातिक प्रतिनिधित्व में भी विभिननता पाई जाती है। आज पर्यटन शैक्षणिक पर्यटन, नैसर्गिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ऐतिाासिक पर्यटन, पारिस्थितिकी पर्यटन, साहसिक पर्यटन में परिवर्तित हो गया है। भारत एवं भारत के विभिन्न राज्य भी इस परिवर्तन से अछुते नही रहे है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्वेश्यों को अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से निम्नानुसार वर्गीकृत कर अध्ययन किया गया है।

1. भारत के विभिन्न राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान पर्यटकों की संख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन
2. भारत के विभिन्न राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान पर्यटकों की संख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व में परिवर्तन का अध्ययन
3. भारत के विभिन्न राज्यों में अध्ययन अवधि के दौरान पर्यटकों की संख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व में परिवर्तन के कारणों का अध्ययन

आकडों के स्त्रोत एवं अध्ययन प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र के अध्ययन के उद्वेश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न स्त्रोतों से (पर्यटन विभाग भारत सरकार एवं ब्यूरो ऑफ इमिग्रेशन)द्वितीयक संमक प्राप्त किये गये है। अध्ययन के उद्वेश्यों की स्पष्टता के लिए पर्यटन मंत्रालय, न्यूज पेपर, शोध पत्रिकाओं एवं विभिन्न पुस्तकों से भी संमक प्राप्त किये गये है। उक्त संमकों से पर्यटकों की राज्यवार आनुपातिक स्थिति को स्पष्ट करने एवं विश्लेषण करने के लिए सरलतम एवं व्यवहारिक सांख्यिकीय विधियो प्रयोग किया गया है।

घरेलु पर्यटकों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भारत के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के घरेलू पर्यटकों की संख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के प्रारंभिक वर्षों में सर्वाधिक पर्यटकों के आनुपतिक प्रतिनिधित्व आंध्रप्रदेश राज्य में 24.19 प्रतिशत पाया जाता है था। शेष राज्यों में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, कर्नाटक, राजस्थान, महाराष्ट,उतराखंड, पं. बंगाल,गुजरात एवं म.प्र. का आनुपतिक प्रतिनिधित्व क्रमशः 22.86,12.63,7.84,5.09,3.66,3.61,3.42,2.59 एवं 2.40 प्रतिशत था। उक्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि भारत के मात्र 28.57 प्रतिशत राज्यों में संपूर्ण देश के कुल पर्यटकों का 88.29 प्रतिशत आनुपतिक प्रतिनिधित्व पाया जाता है। शेष 71.43 प्रतिशत राज्यों में संपूर्ण देश के कुल पर्यटकों का मात्र 11.71 प्रतिशत आनुपतिक प्रतिनिधित्व पाया जाता है। आरेख क्रं 01 के तथ्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के अंतिम वर्षों में घरेलु पर्यटकों के आनुपातिक स्थिति में विशेष परिवर्तन नही हुआ है। राज्यों की रेकिंग में अवश्य परिवर्तन हुआ है। आंध्रपदेश का स्थान तमिलनाडू राज्य ने ले लिया है। प्रथम तीन राज्यों की स्थिति में आपस में परिवर्तित हो गई है। आरेख क्रं 01 एवं 03 में उक्त त्थ्यों को सूक्ष्म रूप से प्रदर्शित किया गया है।

विदेशी पर्यटकों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भारत के विभिन्न राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों के विदेशी पर्यटकों की संख्या के आनुपातिक प्रतिनिधित्व के तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के प्रारंभिक वर्षों में सर्वाधिक पर्यटकों के आनुपतिक प्रतिनिधित्व महाराष्ट राज्य में 14.57 प्रतिशत पाया जाता था। शेष राज्यों में उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, राजस्थान, महाराष्ट्र,उतराखंड, पं. बंगाल, आंध्रप्रदेश,कर्नाटक, म.प्र. गुजरात एवं उतराखंड का आनुपतिक प्रतिनिधित्व क्रमशः 11.31,11.23,10.29,8.50,5.70,4.30,1.59,0.78 एवं 0.73 प्रतिशत था। उक्त तथ्य यह स्पष्ट करते है कि भारत के मात्र 28.57 प्रतिशत राज्यों में संपूर्ण देश के कुल पर्यटकों का 69.14 प्रतिशत आनुपतिक प्रतिनिधित्व पाया जाता है। शेष 71.43 प्रतिशत राज्यों में संपूर्ण देश के कुल पर्यटकों का मात्र 30.86 प्रतिशत आनुपातिक प्रतिनिधित्व पाया जाता है। सारणी क्रं 01 के तथ्यों से यह भी स्पष्ट होता है कि अध्ययन अवधि के अंतिम वर्षों में घरेलु पर्यटकों के आनुपातिक स्थिति में विशेष परिवर्तन नही हुआ है। अध्ययन अवधि के अंतिम वर्षों में मात्र दिल्ली, पंजाब, केरल, बिहार एवं गोवा राज्यों की ओर विदेशी पर्यटकों का रूझान बढ रहा है। सामान्य शब्दों में भारत के मात्र 42.85 प्रतिशत राज्य भारत के कुल विदेशी पर्यटकों के 94.80 प्रतिशत पर्यटकों को लुभा रहे है। शेष 47.15 प्रतिशत राज्यों में संपूर्ण देश के कुल विदेशी पर्यटकों का मात्र 5.20 प्रतिशत आनुपातिक प्रतिनिधित्व पाया जाता है। उक्त तथ्य भारत के असंतुलित पर्यटन विकास की ओर इंगित करते है। आरेख क्रं 02 एवं 04 में उक्त तथ्यों को सूक्ष्म रूप से प्रदर्शित किया गया है।

समस्याएं एवं सुझाव

विभिन्न आरेखों में प्रदर्शित तथ्यों एवं उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारत के विभिन्न राज्यों में पर्यटन उद्योग के विकास में समानता नही है। भारत के मात्र 29.00 प्रतिशत राज्यों में घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों का अनुपात क्रमशः 88.29 एवं 69.14 प्रतिशत पाया जाता है। शेष 71.00 राज्यों में आज भी पर्यटकों का इंतजार हो रहा है। उक्त तथ्य भारत के पर्यटन परिदृश्य के असंतुलित विकास के दयोतक है। भारत के अलग अलग राज्यों में,जनसंख्या,संस्कृति, नैसर्गिक सौंदर्य, एतिहासिक,पुरातातविक सौंदर्य की विविधताएं एवं समृद्वशाली धरोहरों की लंबी श्रंखला है। भारत के उत्तर पूर्वी राज्य नैसर्गिक एवं पारिस्थितीय पर्यटन की असीम संभावनाओं को समेटे हंए है। अंडमान निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप जैसे छोटे क्षेत्र चिकित्सा एवं साहसिक पर्यटन की असीम संभावनाओं को अपने में समेटे हुए है। राष्ट्रीय समेकित पर्यटन नीति के साथ साथ स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखकर अन्य आधारभूत सुविधाओं की विकास प्रक्रिया के क्रियान्वयन से उक्त असमानताओं को दुर कर भारत के पर्यटन उद्योग को एक नई दिशा प्रदान की जा सकती है।

आरेख कं 01
राज्यानुसार घरेलू पर्यटकों रेकिंगवार प्रतिनिधीत्व

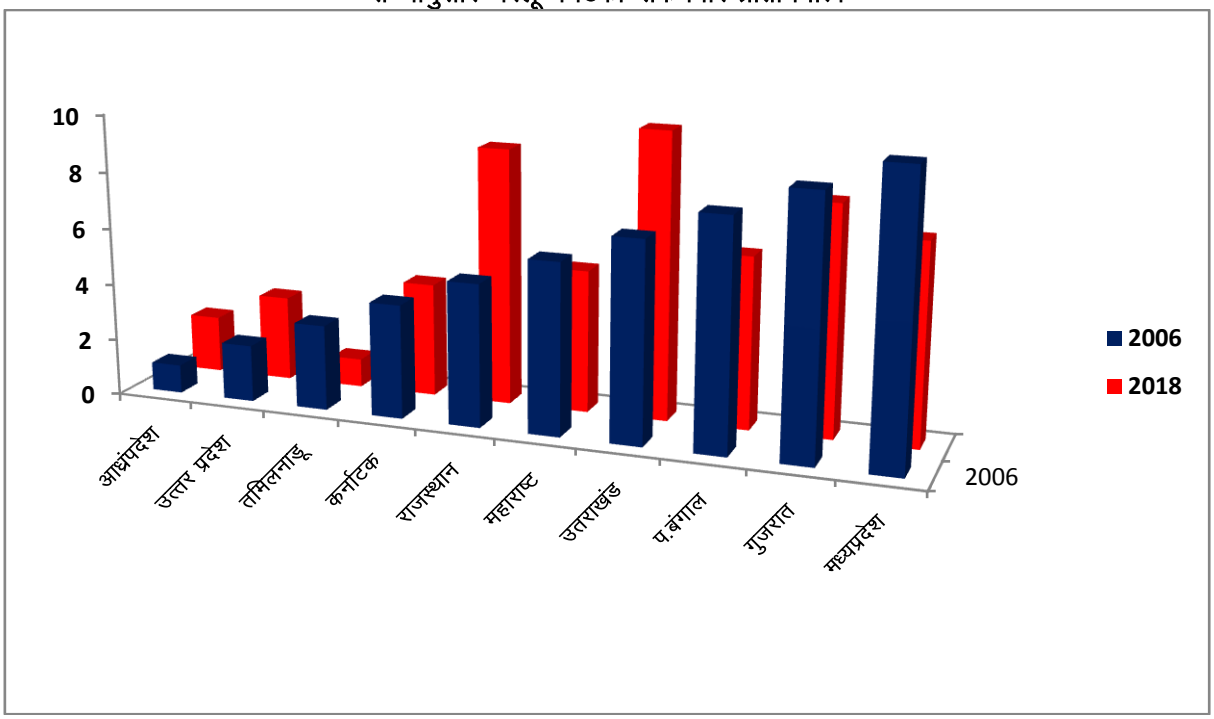

स्रोत :ब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018
आरेख कं 02 राज्यानुसार विदेशी पर्यटकों का रेकिंगवार प्रतिनिधित्व

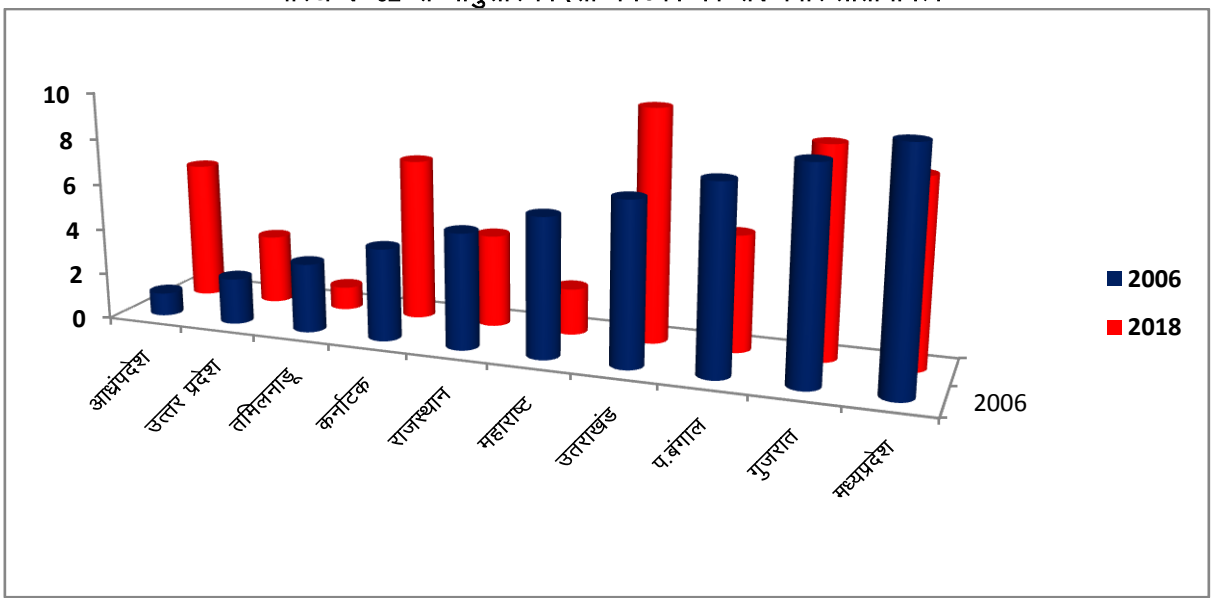

स्रोतःब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

आरेख कं 03 राज्यवार घरेलू पर्यटकों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व (प्रतिशत में)

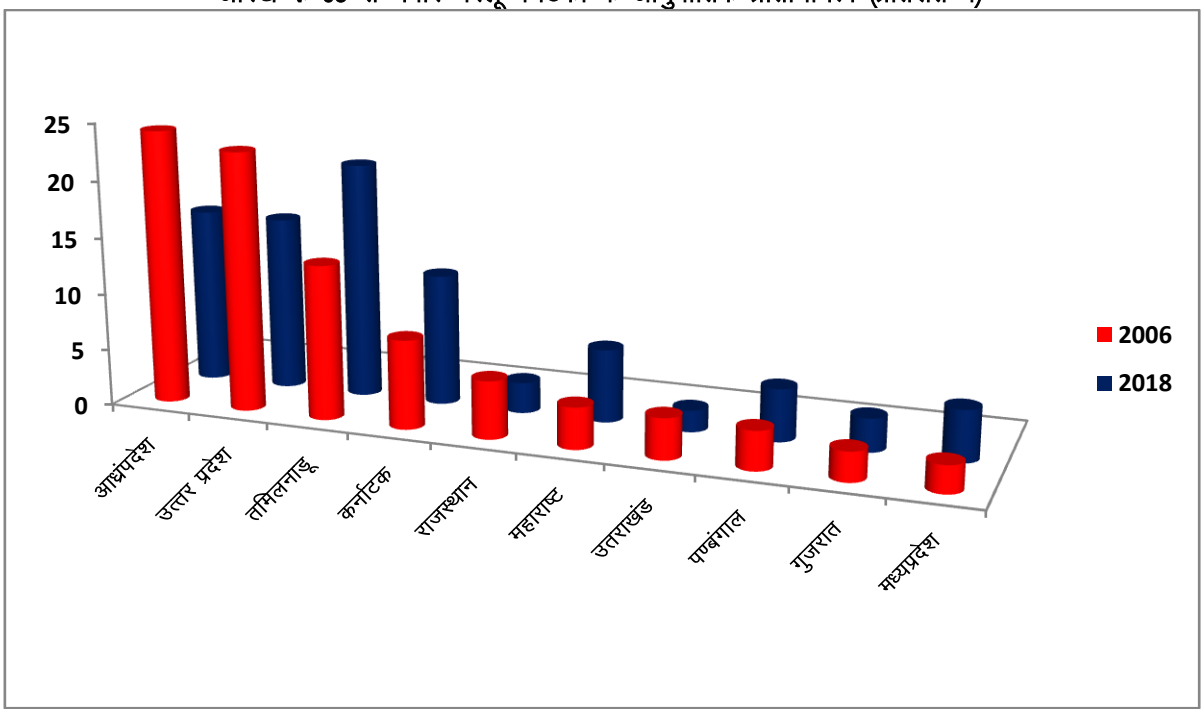

स्रोत :ब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

आरेख कं 04
राज्यवार विदेशी पर्यटकों के आनुपातिक प्रतिनिधित्व (प्रतिशत में)

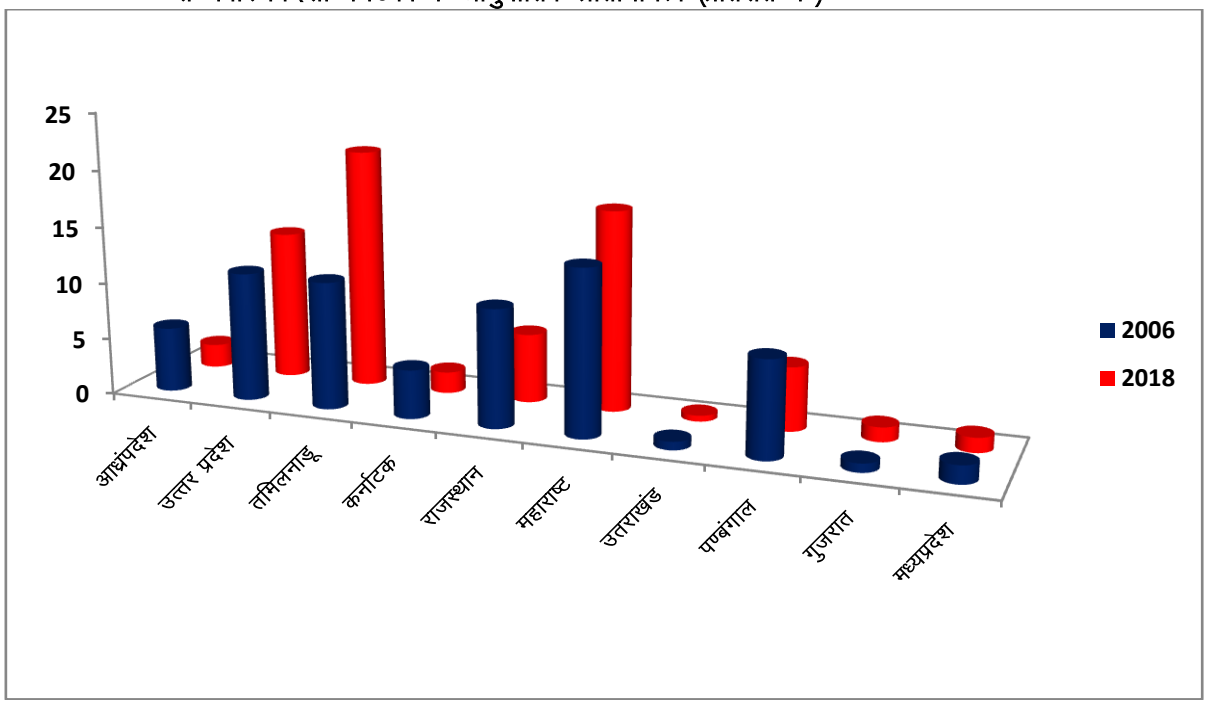

स्रोत :ब्यूरो आफ इमिग्रेशन एवं पर्यटन विभाग भारत सरकार वर्ष 2006 एवं 2018

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Advidot, S.C. and Gatade, D.G.(2007) Study of Behavioural Pattern of Pilgrim tourist at Akkal kot in Solapur District, The Deccan Geographer Vol. 45 PP 23-28*
2. *Fude, Ravindra (2006) A Geographical Study of Chandrapur Tourist Place, The Deccan Geographer PP 59-69*
3. *Gadekar, D.J. and Mhaske P.H.(2009) Satisfaction Index of Pilgrim facilities at Shirdi, The Goa Geographer Vol. VI No. 1 Page 65-68*
4. *Cho, B.H. (1988) "Assessing Tourist Satisfaction", Tourism Recreation research,Vol 23(1)PP 47-54*
5. *Ryan (1995) "Research Tourist Satisfaction: Issues Concepts and problems" Routledge Canada and Newyork.*
6. *Auroubindo Ganesh and Dr. Madhavi, C. 2007. Jan-June, "Impact of Tourism on Indian Economy - A Snapshot" Journal of Contemporary Research in Management, Volume-1, No.1, 2 PP. 235-240.*
7. *Lugosi, P. 2007. Consumer Participation in Commercial Hospitality, International Journal of*
8. *Culture, Tourism and Hospitality Research, Vol. 1, No. 3, pp.227-236*
9. *Krishna, A.G., 1993 "Case study on the Effects of Tourism on Culture and the Environment:*
10. *India; Jaisalmer, Khajuraho and Goa"*
11. *Honey, Martha and Gilpin, Raymond, Special Report, 2009, "Tourism in the Developing World Promoting Peace and Reducing Poverty"*
12. *Market Research Division, Ministry of Tourism, GOI, 2006 "Tourism Statistics 2018"*